स्कूल शिक्षा विभाग, पंजाब

कक्षा बारहवीं

हरिवंश राय 'बच्चन'

पौधों की पीढ़ियाँ

देखा, एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है;
उसके नीचे हैं
छोटे-छोटे कुछ पौधे-
बड़े सुशील-विनम्र-
लगे मुझसे यों कहने,
"हम कितने सौभाग्यवान् हैं|
आसमान से आग बरसे, पानी बरसे,
आंधी टूटे, हमको कोई फिकर नहीं है|
एक बड़े की वरद छत्र-छाया के नीचे
हम अपने दिन बिता रहे हैं
बड़े सुखी हैं |"

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश हरिवंश राय बच्चन जी द्वारा रचित कविता पौधों की पीढ़ियाँ से लिया गया है | इसमें कवि ने नई और पुरानी पीढ़ी की सोच में अन्तर को स्पष्ट किया है |

व्याख्या - कविवर हरिवंश राय बच्चन जी प्रस्तुत पंक्तियों में कहते हैं कि मैंने देखा कि एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है | उसके नीचे कुछ छोटे- छोटे पौधे उगे हैं जो बड़े अच्छे स्वभाव और विनम्र भाव के थे | वे छोटे- छोटे पौधे कवि से कहने लगे कि हम कितने सौभाग्यशाली हैं कि आसमान से चाहे आग बरसे, चाहे पानी अर्थात् गर्मी का मौसम हो या वर्षा ऋतु हो, चाहे आंधी आए या तूफान आए पर हमें कोई चिंता नहीं है | क्योंकि हम एक बड़े बरगद के वृक्ष के आश्रय में रह कर अपने दिन बिता रहे हैं और बड़े सुखी हैं| बरगद उनकी रक्षा करता है|

देखा, एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है;
उसके नीचे हैं
छोटे-छोटे कुछ पौधे-
असंतुष्ट और रुष्ट ।
देखकर मुझको बोले,
"हम भी कितने बदकिस्मत हैं !
जो खतरों का नहीं सामना करते

कैसे वे ऊपर को उठ सकते हैं !"
इसी बड़े की छाया ने तो
हमको बौना बना रखा
हम बड़े दुःखी हैं ।

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश हरिवंश राय बच्चन जी द्वारा रचित कविता पौधों की पीढ़ियाँ से लिया गया है | इसमें कवि ने नई और पुरानी पीढ़ी की सोच में अन्तर को स्पष्ट किया है |

व्याख्या - कविवर हरिवंश राय बच्चन जी प्रस्तुत पंक्तियों में कहते हैं कि मैंने देखा कि एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है जिसके नीचे कुछ छोटे-छोटे पौधे थे जो असंतुष्ट और रुष्ट थे । कवि को देखकर वे कहने लगे कि हम कितने बदकिस्मत हैं, जो खतरों का सामना करना नहीं सीख सके क्योंकि यह बड़ा बरगद का पेड़ हमारे स्थान पर सब कुछ सहन कर लेता है । बिना संघर्ष किए और बिना खतरों का सामना किए हम कैसे उन्नति कर सकते हैं, क्योंकि इस बड़े बरगद की छाया ने हमें बौना बना दिया है। इसलिए हम बहुत दुःखी हैं कि हम कुछ नहीं कर सकते।

देखा, एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है;
उसके नीचे हैं
छोटे-छोटे कुछ पौधे-
तने हुए उद्दंड।
देखकर मुझको गरजे,
"हमको छोटा रखकर ही
यह बड़ा बना है,
जन्म अगर हम पहले पाते
तो हम इसके अग्रज होते,
हम इसके दादा कहलाते,
इस पर छाते ।"

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश हरिवंश राय बच्चन जी द्वारा रचित कविता पौधों की पीढ़ियाँ से लिया गया है | इसमें कवि ने नई और पुरानी पीढ़ी की सोच में अन्तर को स्पष्ट किया है |

व्याख्या - कविवर हरिवंश राय बच्चन जी प्रस्तुत पंक्तियों में कहते हैं कि मैंने देखा कि एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है जिसके नीचे कुछ छोटे-छोटे पौधे थे जो कुछ अकड़े हुए विद्रोही और उद्दंड स्वभाव के थे । वे कवि को देखकर गरज कर बोले कि यह बरगद का पेड़ हमें छोटा बनाकर ही बड़ा बना है । यदि हमारा जन्म पहले हो जाता तो हम इससे बड़े होते । तब हम इसके दादा कहलाते और यह हमारे संरक्षण में रहता ।

नहीं वक्त का जुल्म हमेशा
हम यों ही सहते जाएँगे।
हम काँटों की
आरी और कुल्हाड़ी अब तैयार करेंगे,
फिर जब आप यहाँ आएँगे,
बरगद की डाली-डाली कटती पाएँगे।
ठूंठ-मात्र यह रह जाएगा-
नंगा बूचा,
और निगल जाएँगे तन हम इसे समूचा ।"

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश हरिवंश राय बच्चन जी द्वारा रचित कविता पौधों की पीढ़ियाँ से लिया गया है | इसमें कवि ने नई और पुरानी पीढ़ी की सोच में अन्तर को स्पष्ट किया है |

व्याख्या - कविवर हरिवंश राय बच्चन जी प्रस्तुत पंक्तियों में वर्तमान पीढ़ी द्वारा बड़ों को नष्ट करने की बात का उल्लेख करते हैं । उनके अनुसार उद्दंड पौधे कवि से कहते हैं कि हम समय के इन अत्याचारों को सदा सहन नहीं करेंगे । हम काँटों की आरी और कुल्हाड़ी तैयार करेंगे । फिर जब आप दोबारा यहाँ आएँगे तो इस बरगद की डाली-डाली कटी हुई पाएँगे और यह पेड़ जो अपने आप को बहुत बड़ा समझता है एक सूखे पेड़ की तरह ठूंठ मात्र रह जाएगा । हम इसे सारे का सारा निगल जाएँगे ।

अभ्यास-

प्रश्न – 'पौधों की पीढ़ियाँ' में छोटे-छोटे सुशील और विनम्र पौधों का क्या कहना है ?

उत्तर – बड़े बरगद के पेड़ की छत्र-छाया में रहने वाले छोटे-छोटे सुशील पौधे अपने आप को सौभाग्यशाली समझते हैं जो उन्हें इस बड़े पेड़ का संरक्षण मिला है । उन्हें किसी प्रकार की चिंता नहीं है क्योंकि आसमान से चाहे आग बरसे, चाहे पानी अर्थात् गर्मी का मौसम हो या वर्षा ऋतु हो, चाहे आंधी आए या तूफान आए सब मुसीबतें बरगद का पेड़ अपने ऊपर झेल लेता है । वे निश्चिंत और सुखी हैं ।

प्रश्न – 'बरगद का पेड़' किसका प्रतीक है ? स्पष्ट करें ।

उत्तर – 'बरगद का पेड़' बड़े-बुजुर्गों का प्रतीक है जो अपनी नई पीढ़ी को संरक्षण प्रदान करता हैं। अपने छोटों और अपने परिवार पर आने वाली मुसीबतों को अपने ऊपर झेल लेता हैं ।

प्रश्न – 'पौधों की पीढ़ियाँ' युग सत्य को उद्भासित करती हैं, स्पष्ट करें ।

उत्तर – नई और पुरानी पीढ़ी में सदा विचार भेद रहता है किन्तु वर्तमान युग का सत्य यह है कि नई पीढ़ी ने अपना विद्रोह दर्शाने के लिए पुरानी पीढ़ी के अस्तित्व को नकारना शुरू कर दिया है । उसे पुरानी पीढ़ी का अस्तित्व असहनीय प्रतीत होता है । इसी कारण वह पुरानी पीढ़ी को नष्ट करने पर तुली हुई है । कवि ने इस कविता के माध्यम से युग की इस भयावह स्थिति का यथार्थ चित्र चित्रित किया है ।

अन्धेरे का दीपक

है अँधेरी रात, पर दीवा जलाना कब मना है ?
कल्पना के हाथ से कमनीय
जो मन्दिर बना था,
भावना के हाथ ने जिसमें
वितानों को तना था,
स्वप्न ने अपने करों से
था जिसे रूचि से सँवारा
स्वर्ग के दुष्प्राप्य रंगों
से, रसों से जो सना था ।
ढह गया वह तो जुटाकर
ईंट, पत्थर कंकड़ों को
एक अपनी शांति की
कुटिया बनाना कब मना है ?
है अंधेरी रात, पर दीवा जलाना कब मना है ?

प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश 'हरिवंश राय बच्चन' जी द्वारा रचित कविता 'अन्धेरे का दीपक' से लिया गया है । इसमें कवि ने मनुष्य को दुःख और अवसादपूर्ण क्षणों में भी आशा का दामन न छोडने का संदेश दिया है ।

व्याख्या – प्रस्तुत पंक्तियों में बच्चन जी कहते हैं कि माना कि यह रात अंधेरी है पर इस अंधेरी रात में प्रकाश फैलाने के लिए दीपक जलाने से कोई नहीं रोकता । माना कि तुम ने कल्पना में जिस महल का निर्माण किया था और अपनी भावनाओं से जो तम्बू तान दिए थे जिन्हें तुमने अपने स्वप्नों से अपनी पसंद के अनुसार सजाया था और जो स्वर्ग में कठिनाई से प्राप्त होने वाले रंगों और रसों से लिप्त था । यदि वह महल ढह भी जाए अर्थात् तुम्हारी कल्पना साकार न हो, तुम्हारे सपने

अधूरे रह जाएँ, तो ढहे हुए उस महल के ईंट पत्थर और कंकड़ जोड़ कर अपनी शांति की कुटिया बनाना कब मना है ? माना कि रात अंधेरी है पर अंधेरे को दूर करने के लिए दीपक जलाने से तुम्हें कौन रोकता है ?

बादलों के अश्रु में धोया
गया नभ-नील नीलम
का बनाया ठा गया मधू-
पात्र मनमोहक, मनोरम,
प्रथम ऊषा की किरण को
लालिमा-सी लाल मदिरा
थी उसी में चमचमाती
नव घनों में चंचला, सम,
वह अगर टूटा मिलाकर
हाथ की दोनों हथेली,
एक निर्मल स्त्रोत से
तृष्णा बुझाना कब मना है ?
है अंधेरी रात, पर दीवा जलाना कब मना है ?

प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश 'हरिवंश राय बच्चन' जी द्वारा रचित कविता 'अन्धेरे का दीपक' से लिया गया है । इसमें कवि ने मनुष्य को सदैव आशावादी होने का संदेश दिया है ।

व्याख्या – इन पंक्तियों में कवि असफलता मिलने पर भी निराश न होकर उत्साहित होकर फिर से नवनिर्माण की प्रेरणा देता हुआ कहता है कि यदि तुम ने बादलों के आँसुओं से धुले नीले आकाश जैसे बहुमूल्य नीलम पत्थर से बना शराब पीने का प्याला बनाया था, जो अत्यन्त मन को लुभाने वाला और सुंदर बन पड़ा था, उस प्याले में उषा की पहली किरण जैसी लाल मदिरा डाली थी: जो उस प्याले में इस तरह चमचमा रही थी जैसे नए बादलों से बिजली चमकती हो, वह प्याला यदि किसी कारणवश टूट भी जाए तो अपने दोनों हाथों की हथेलियों की अंजलि बनाकर किसी साफ चश्मे से अपनी प्यास बुझाने की मनाही तो नहीं है । माना कि रात अंधेरी है पर अंधेरे को दूर करने के लिए दीपक जलाने से तुम्हें कौन रोकता है ?

अभ्यास

प्रश्न – 'मधु पात्र टूटने' तथा 'मंदिर के ढहने' के द्वारा कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर – 'मधु पात्र टूटने' के द्वारा कवि कहना चाहता है कि यदि किसी कारण तुम्हारी कोई बहुमूल्य वस्तु खो जाए तो उसे लेकर दु:खी होने के स्थान पर जो कुछ तुम्हारे पास शेष बचा है उसे अपने

काम में लाते हुए नए सिरे से निर्माण कार्य में लग जाना चाहिए । 'मंदिर के ढहने' के द्वारा कवि कहना चाहता है कि यदि तुम्हारी कल्पना से बना हुआ तुम्हारे सपनों का मंदिर ढह जाए तो निराश न होकर शेष बचे ईंट, पत्थर और कंकर एकत्र कर अर्थात् जो बचा है उसे ही एकत्र कर, नए संसार का निर्माण करने में लग जाना चाहिए ।

प्रश्न – 'अंधेरे का दीपक' कविता का सार लिखें ।

उत्तर – 'अंधेरे का दीपक' हरिवंश राय बच्चन जी द्वारा रचित एक आशावादी कविता है । बच्चन जी कहते हैं कि यदि जीवन में तुमने कोई मधुर कल्पना की और एक अत्यन्त सुंदर महल बना लिया है, यदि वह टूट भी जाए तो निराश होने की बजाय उसी महल के ईंट, पत्थर जोड़कर नई झोंपड़ी बना सकते हो । यदि तुम्हारा बनाया मदिरापान का सुन्दर पात्र टूट जाए तो तुम अपने हाथों की हथेलियों की अंजलि बनाकर किसी निर्मल झरने का जल तो पी सकते हो । इसलिए असफलताओं से निराश होने के स्थान पर फिर से प्रयास करना चाहिए । सफलता अवश्य मिलेगी ।

मार्गदर्शक :
डॉ॰ सुनील बहल
असिस्टेंट डायरेक्टर
एस॰सी॰ई॰आर॰टी॰ पंजाब

तैयार कर्ता :
मुनीष कुमार हिन्दी शिक्षक
सरकारी सीनियर सेकंडरी स्मार्ट स्कूल
(कन्या) समराला